ग़ज़ल

- ग़ालिब

हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है

तुम्हीं कहो कि ये अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू क्या है

चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन

हमारे जैब को अब हाजत-ए-रफ़ू क्या है

जला है जिस्म जहाँ दिल भी जल गया होगा

कुरेदते हो जो अब राख जुस्तुजू क्या है

रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं क़ाइल

जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है

रही न ताक़त-ए-गुफ़्तार और अगर हो भी

तो किस उमीद पे कहिए कि आरज़ू क्या है

हुआ है शह का मुसाहिब फिरे है इतराता

वगर्ना शहर में 'ग़ालिब'की आबरू क्या है

ग़ज़ल का वज़्न / ग़ज़ल की बह्र (***BeHr) :***

मुज्तस

अरकान :

मफ़ाइलुन फ़इलातुन मफ़ाइलुन फ़इलुन (फ़ालुन / फ़इलान / फ़ालान)

1212 1122 1212 112 (22 / 1121 / 221)

रदीफ़ :

क्या है

क़ाफ़िया (क़वाफ़ी) :

तू , गुफ़्तुगू , रफ़ू , जुस्तुजू ,लहू , आरज़ू , आबरू